प्रेमचंद की कहानी-कला और उनकी "कफन" कहानी

प्रेमचन्द का कहानी-साहित्य इतना विशाल, व्यापक एवं विस्तृत है कि इसमें समूचा एक युग आ गया है। उन्होंने बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण से प्राय: तीन दशाब्दियों के बीच में लगभग चार सौ कहानियां लिखी है। एक तरह से वह अपने में स्वयं एक कहानी-युग थे, जिसमें हिन्दी कहानियों के सच्चे तत्व अंकुरित हुए, विकसित हुए और इनसे भारतीय कहानी-साहित्य में सुगन्धि आई।

वस्तुत: प्रेमचन्द हिन्दी कहानीकार के रूप में एक युग-निर्माता हैं। इनके समय में कहानी का विकास ही हो रहा था; कोई स्पष्ट धारणा प्रकाश में नहीं आई थी। उस समय कहानी को साहित्य की एक प्रमुख विधा के रूप में हिन्दी साहित्य में प्रस्थापित करने का श्रेय प्रेमचन्द को ही है। प्रेमचन्द जितने बड़े उपन्यासकार हैं, उतने ही बड़े कहानीकार भी हैं। इनकी कहानियां आदर्शोन्मुख यथार्थवाद पर आधृत हैं। शिल्प और वस्तु—दोनों की दृष्टियों से वह युग-निर्माता हैं। उन्होंने कहानी को कल्पना के अमूर्त जगत से निकालकर यथार्थ के वास्तविक धरातल पर प्रतिष्ठित किया और पात्रों के चरित्रविकास पर दृष्टि केन्द्रित करके जन जीवन का बहुरंगी चित्रण किया।

प्रेमचन्द उर्दू से हिन्दी में आये थे। इनका बचपन का नाम नवाबराय था और इसी नाम से वह उर्दू में लिखा करते थे। सन् १९०७ से १९१६ तक—९ वर्ष प्रेमचन्द उर्दू में कहानियां लिखते रहे, हिन्दी कहानी-साहित्य में उनका वास्तविक रूप में प्रवेश सन् १९१७ के बाद हुआ। सन् १९१७ से-१९३६ तक—२० वर्ष तक उनकी कहानियां क्रमशः वास्तविकता की ओर विकास पाती रही हैं।

प्रेमचन्द की कहानियों को ऐतिहासिक विकास-क्रम की दृष्टि से तीन कालों में रखा जा सकता है—

(१) आरंभिक काल (प्रयोग काल) सन् १९२० तक।
(२) स्थायित्व काल (विकास काल) सन् १९३० तक।
(३) उत्कर्ष काल (कला का चरम विकास) सन् १९३६ तक।

प्रेमचन्द की कहानियों में पायी जाने वाली उनकी विचारधारा के क्रमिक विकास का उल्लेख करते हुए पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने लिखा है, "उनकी कहानियां प्रारंभिक सुधारवाद का रूप लेकर चली थी। मध्यकालीन कहानियां राष्ट्रवाद के सर्वसामान्य रूप की पोषिका थीं और उत्तरकालिक कहानियां जनवाद के भारतीय परिष्कृत रूप से ओतप्रोत। उनकी प्रारंभिक कहानियों में अतीत के चित्र भी हैं, पर आगे चलकर उन्होंने गड़े मुरदे उखाड़ना बन्द कर दिया।"

इसका अर्थ यह हुआ कि प्रेमचंद उत्तरोत्तर समाजवादी होते गए थे। इस समाजवादी विचारधारा के पीछे उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है। उनकी कहानियों में उनका संघर्षरत जीवन प्रतिबिंबित हो रहा है, इसका उल्लेख स्वयं प्रेमचंद ने अपनी आत्मकहानी के प्रारंभ में किया है—"मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है जिसमें कहीं-कहीं गढ़े तो हैं, पर टीले, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खड्डों को स्थान नहीं हैं।" अपने जीवन के लक्ष्य के विषय में वह लिखते हैं कि जीवन को सुखी बनाना ही भक्ति और मुक्ति है। यदि तुम हंस नहीं सकते, रो नहीं सकते, तो तुम इन्सान नहीं हो। यही कारण है कि उनकी कहानियों मे मनोवैज्ञानिकता है और विषम परिस्थितियों में भी साहस-पूर्वक सामना करने की क्षमता है।

प्रेमचंद की कहानियों में जैसे-जैसे कला का निखार होता गया, भाव और विचार की दृष्टि से भी इनमें परिपक्वता और गहनता आती गयी। उत्कर्ष काल की कहानियों में चित्रित परिस्थितियों और व्यक्त भावों के बीच सुन्दर

समन्वय है। उनकी कहानियों में परिस्थितियों के प्रति विद्रोह भी व्यापक रूप से देखने को मिलता है।

कुछ विद्वान प्रेमचंद की कहानियों पर यह आक्षेप लगाते हैं कि उनमें मनोवैज्ञानिकता का अभाव है। पर "मैं कहानी कैसे लिखता हूं" शीर्षक निबन्ध में प्रेमचंद ने स्पष्ट लिखा है—

"मेरे किस्से प्राय: किसी न किसी प्रेरणा अथवा अनुभव पर आधारित होते हैं। मगर घटना मात्र का वर्णन करने के लिये मैं कहानी नहीं लिखता। मैं उनसे किसी दार्शनिक और भावात्मक सत्य को प्रकट करना चाहता हूं, लेकिन कोई घटना कहानी नहीं होती, जब तक कि वह किसी मनोवैज्ञानिक सत्य को व्यक्त न करे।"

"कफन" कहानी प्रेमचंद के इस मन्तव्य को पूर्णरूपेण सत्य सिद्ध करती है। प्रेमचद में मनोविज्ञान है, पर फ्रायड का काममनोविज्ञान नहीं है जिसका अभाव ही आधुनिक लेखकों को खटकता है।

"कफन" : प्रेमचन्द की कहानी-कला की विशेषताएं

प्रेमचन्द की कहानी "कफन" उनके उत्कर्ष काल की रचना है। इस कहानी के संबंध में राजेन्द्र यादव ने कहा है—"यह कहानी शिल्प और वस्तु के स्तर पर प्रेमचन्द की कहानी-कला का चरम विकास प्रस्तुत करती है: "कफन" कहानी को आधार बनाकर देखा जाये तो प्रेमचन्द की कहानी-कला की निम्नलिखित विशेषताएं दिखायी देती हैं—

सामाजिक यथार्थवादी कलाकार—प्रेमचन्द की कहानी-कला का लक्ष्य सामाजिक यथार्थवाद है। मानसरोवर की भूमिका में प्रेमचन्द ने लिखा है, "वर्तमान आख्यायिका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और जीवन के यथार्थ स्वाभाविक चित्रण को अपना ध्येय समझती हैं।" "कफन" कहानी में भी उन्होंने यथार्थ चित्रण की ओर विशेष बल दिया है। श्री राजेन्द्र यादव ने भी लिखा है, "अन्त की ओर उनके दृष्टिकोण में उल्लेखनीय परिवर्तन है और वह समाज के विभिन्न तबकों या वेशों के टाइप पात्र लेने की अपेक्षा वर्ग-संघर्ष और मार्क्सीय दृष्टि से पात्रों का चुनाव करते हैं। यथार्थवादी कहानियों में हल देने का कोई आग्रह नहीं है!" प्रेमचन्द "कफन" में घीसू और माधव के मन की कुप्रकृतियो का चित्रण करते हैं। किन्तु इसमें उनका आक्रोश कुव्यवस्था और वर्ग-

विषमता की ओर अधिक है। इसलिए प्रेमचन्द लिखते हैं कि जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछबहुत अच्छी न थी किसानों के मुकाबले में वे लोग जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना और जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहां इस तरह की मनोवृत्ति पैदा हो जाना कोई अचरज की बात नहीं थी। हम तो कहेंगे घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान था और किसानों के विचारशून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की कुत्सित मण्डली में जा मिला था।"

प्रेमचन्द यथार्थवादी कलाकार हैं और "कफन" में यह यथार्थवाद जाकर अभिव्यक्त हुआ है। जब जमीन चली जाती है तो किसान मजदूर बन जाता है और जब मजदूरी के मिलने में भी अनिश्चय रहता है तो वह उपजीवी बन जाता है। घीसू और माधव इसी अनिश्चय की आशंका से अकर्मण्य हो गये हैं। "कफन" कहानी, यदि देखा जाये तो बुधिया के कफन की कहानी न होकर मानवीयता और मृत नैतिक बोध की कहानी है। अतः घीसू और माधव की अकर्मण्यता व्यक्तिपरक न होकर समाजपरक है, जहां आजीविका की अनिश्चितता है।

सामाजिक व्यवस्था के प्रति प्रेमचन्द का विद्रोह भी निम्न पंक्तियों में स्पष्ट रूप से व्यक्त हुआ है—

"घीसू खड़ा हो गया और जैसे उल्लास की लहरों में तैरता हुआ बोला— "हां बेटा, बैकुण्ठ में जायेगी। किसी को सताया नहीं, किसी को दबाया नहीं, मरते-मरते हमारी जिन्दगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गयी। वह न बैकुण्ठ में जायेगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जायेंगे जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं और पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मन्दिरों में जल चढ़ाते है।"

मनोवैज्ञानिक विश्लेषण :—प्रेमचन्द की कहानी "कफन" का आधार मनोवैज्ञानिक है। इसमें घीसू और माधव के अकर्मण्य मन की गुत्थियों और उनकी भावनाओं का सजीव चित्रण किया गया है। "मानसरोवर" की भूमिका में भी प्रेमचन्द इस मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को अंकित करते हुए लिखते हैं— "गल्प का आधार घटना नहीं, मनोवैज्ञानिक अनुभूति है। आज लेखक कोई रोचक दृश्य देखकर कहानी लिखने नहीं बैठता, उसका उद्देश्य स्थूल सौन्दर्य नहीं, वह तो ऐसी कोई प्रेरणा चाहता है, जिसमें सौन्दर्य की झलक हो और जिसके द्वारा वह पाठक की सुन्दर भावनाओं को स्पष्ट कर सके।"

"कफन" कहानी का मनोवैज्ञानिक आधार यह अनुभूति है कि आधुनिक आर्थिक व्यवस्था में सर्वहारावर्ग कितना पतित हो सकता है। घीसू और माधव दोनों ही सदा के भूखे हैं, मेहनत करने पर भी उन्हें भरपेट रोटी नहीं मिलती, दूसरों को भी परिश्रम करके भूखे मरते देखते हैं, इससे उनमें अकर्मण्यता आती है, पर साथ ही पेट, भोजन और जीभ स्वादिष्ट व्यंजन मांगती है, इसीलिये वे कफन के लिए चन्दा करके एकत्र रुपयों से पहले अपना पेट भरते हैं। तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन और शराबें पीते-खाते हैं। यही नहीं, अपने कृत्य की उपयुक्तता भी सिद्ध करते हैं।

"कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते-जी तन ढंकने को चिथड़ा भी न मिले उसे मरने पर नया कफन चाहिये।"

"जब कि कफन लाश के साथ ही जल जाता है।"

मानवीय दुर्बलताओं का चित्रण : उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण का परिचय, इससे भी लगता है कि उन्होंने सामाजिक विषमता के साथ-साथ मानव मन की दुर्बलताओं का भी कुशलतापूर्वक चित्रण किया है। उनके चरित्र प्रतीक न होकर यथार्थ जीवन में पाये जाने वाले चरित्र हैं—वे सच्चे चरित्र हैं, इसीलिये उनकी दुर्बलताएँ और कुण्ठाएँ भी सहज रूप में चित्रित हुई है। भूख मानव के उचितानुचित के विवेक पर परदा डाल देती है। घीसू और माधव भी भूखे पात्र हैं, अतः उनके चरित्र की दुर्बलताएं उनमें बाप-बेटे में भी शक दिखाती हैं—

घीसू ने आलू निकालकर छीलते हुए कहा—"जाकर देख तो, क्या दशा है उसकी? चुड़ैल का फसाद होगा, और क्या? यहां तो ओझा भी एक रुपया मांगता है।"

माधव को भय था कि वह कोठरी में गया तो घीसू आलुओं का एक बड़ा भाग साफ कर देगा। बोला, "मुझे वहां जाते डर लगता है।"

व्यापक जीवन का समावेश—डॉ० छविलाल त्रिपाठी ने इनके सम्बन्ध में लिखा है, 'मध्यवर्गीय जनता का चित्रण और घरेलू जीवन में मनोविज्ञान की स्थापना सर्वप्रथम प्रेमचन्द ने की। भारत गांवों में है। वहां के निवासी किसान, जमींदार, महाजन, पुलिस और पटवारी आदि सबको उन्होंने अपनी कहानियों का पात्र बनाया है।"

"कफन" कहानी का सम्बन्ध भी ग्रामीण जीवन से है और इसमें चमारों

के रहन-सहन पर विचार किया गया है, पर साथ ही ग्राम के अन्य मेहनतकश निवासियों—किसानों की भी दशा का इसमें परिचय मिलता है !

साथ ही ग्रामवासियों की प्रवृत्ति और उनकी सहृदयता व दयालुता का भी इसमें चित्रण है। यदि किसी से घृणा भी है पर वह यदि मांगने के लिये द्वार पर आ जाता है, तो देना कर्तव्य समझकर वे कुछ-न-कुछ दे ही देते हैं।

समग्रतः प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख सुधारवादी यथार्थवादी कहानीकार हैं, पर "कफन" में उन्होंने कोई सुधारवादी दृष्टिकोण न देकर आर्थिक विषमता से उत्पन्न विद्रोह की भावना का निर्बल रूप प्रस्तुत किया है जो मानव-मन की दुर्बलताओं को भी सहज आभासित कर देता है।

कफन : कथासार

चमार स्वभावतः वैसे ही आलसी एवं अकर्मण्य होते हैं और घीसू तथा माधव तो उनमें भी सरनाम थे। घीसू एक दिन काम करता और तीन दिन आराम। माधव घीसू का लड़का इतना कामचोर था कि आधे घण्टे काम करता और घंटाभर चिलम पीता। इसलिये उसे कहीं मजदूरी नहीं मिलती थी। गांव में काम की तो कमी नहीं थी, पर कामचोरों को काम कौन दे। उसे कोई काम तभी देता, जब कोई और न मिलता तथा एक आदमी का काम दो जनों से कराना मंजूर होता। वे दूसरों के खेतों से मटर-आलू चुरा लाते और भूनकर खा जाते। घीसू ने अपने जीवन के साठ साल इसी तरह निकाल दिये थे और माधव भी पिता के कदमों पर चल रहा था, बल्कि कहिये कि उसका नाम और भी उजागर कर रहा था।

पिछले साल उसका विवाह न जाने कैसे हो गया था। लड़की भली थी। उसने उस खानदान की व्यवस्था की—पिसाई करके या घास छीलकर वह दो जून आटे का जुगाड़ करती और उनके पेट भरती। तब से वे दोनों और भी आरामतलब हो गये थे, कहीं काम पर जाते ही नहीं थे।

साल भर बीतते-न-बीतते वह प्रसव-वेदना से कराहने लगी। एक दिन उसको प्रसव की अपार वेदना हो रही थी, पर उनमें इतना आलस्य भरा हुआ था कि उसे देखने भी नहीं गये—दाई आदि का प्रबन्ध तो दूर रहा—लेटे-लेटे ही उसकी कराह सुनते रहे—न बाप उठा, न बेटा। दोनों कहीं से आलू चुरा कर लाये थे और उन्हें भून रहे थे। माधव का भय था कि अगर

वह उठा तो घीसू काफी आलू अकेले खा जाएगा। उन्हें यह भी सम्भावना थी कि वेदना से कहीं वह मर न जाये। पर इसकी भी उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। यदि एक और खाने वाला आ गया तो क्या होगा, इससे अच्छा है, कि दोनों ही मर जायें।

आलू खाकर दोनों ने पानी पीया और वहीं अलाव के पास अपनी धोतियां ओढ़कर पांव पेट में डाले सो गये। बुधिया के कराहने की ओर उन्होंने ध्यान नहीं दिया और इसी प्रसव-वेदना में तड़पते हुए उसके प्राण निकल गये। सुबह देखा तो पाया कि बुधिया के मुंह पर मक्खी भिनक रही थी और बच्चा उसके पेट में ही मर गया था। सारा शरीर लहू से सना हुआ था।

माधव और घीसू-- दोनों ही हाय-हाय करके छाती पीटने लगे। पड़ोसियों ने सुना तो दौड़ आये और उन्हें समझाया। और तब वे उसके लिये कफन और लकड़ी के बारे में सोचने लगे। घर में एक पैसा भी न था। दोनों जमींदार के पास गये। हालांकि वह उनसे घृणा करता था, पर उनकी दीनता, रोना और गिड़गिड़ाना देखकर दो रुपये उनकी ओर फेंक दिये। फिर तो दोनों ने जमींदार के नाम की दुहाई देकर गांव के बनिये-महाजनों से भी पैसे लिये। जब जमींदार साहब ने पैसे दिये तो भला वे कैसे मना कर सकते थे। थोड़ी ही देर में घीसू और माधव की जेब में पांच रुपये हो गये। कहीं से अनाज मिल गया, कहीं से लकड़ी। दोपहर को दोनों बाजार से कफन लाने चल दिये।

पर बाजार पहुंचकर घीसू की नीयत बदल गयी। उसने माधव को सुझाया कि जो मर गया उस पर अच्छा कफन डालने से क्या फायदा, इसलिये कोई घटिया-सा कपड़ा देख लिया जाये। पर शाम तक घूमते-फिरते रहने के बाद भी उन्हें कुछ पसंद न आया। वास्तव में वे दोनों रुपये हजम कर जाना चाहते थे और इसी प्रेरणा से वह एक शराब की हट्टी के सामने जा खड़े हुए। घीसू ने हट्टी के सामने जा कर एक बोतल शराब का आर्डर दिया। थोड़ी देर बाद चिखौना आया, तली हुई मछलियां आयीं। दोनों कुज्जियों में डाल-डाल कर शराब पीने लगे और सरूर में आकर बकने लगे। मृतक बुधिया को आशीर्वाद देते हुए कहने लगे कि आज उसी के कारण यह खाना मिला है, इसलिये उसे स्वर्ग मिलेगा। वह बड़ी पुण्यात्मा

है। लेकिन फिर उसके सामने चिन्ता थी कि वे लोगों से क्या कहेंगे कि कफन क्यों नहीं लाये—पैसे तो सभी समाप्त हो गये थे।

माधव की बात पर घीसू बड़ी काइयां हंसी हंसा और उसने सुझाया कि कह देंगे कि जेब से खिसक गये। उन्हीं को देखने में इतनी देर भी लग गयी। उसकी तरकीब सुनकर माधव भी दिल खोलकर खूब हंसा। उसने सोचा कि बुधिया तो मर गयी पर उसके बहाने आज खाने को खूब मिला।

आधी बोतल समाप्त हो जाने पर माधव सामने की दूकान से गर्मागर्म पूरियां, चटनी, अचार और कचौड़ियां ले आया। दोनों दो सेर पूरियां खा गये। उन्होंने सोच लिया था कि पड़ोसी कफन का प्रबन्ध तो करेंगे ही, हां, अब के उन्हें पैसे न मिलेंगे। मरे को कौन ऐसे छोड़ देता है, भला!

भरपेट खाकर माधव ने बची हुई पूरियों की पत्तल उठाकर एक भिखारी को दे दी जो काफी देर से वहीं खड़ा उसकी ओर भूखी आंखों से देख रहा था। उसने इस देने के आनन्द और उल्लास का अनुभव जीवन में पहली ही बार किया।

खा-पीकर दोनों बकने लगे। घीसू तो दार्शनिकों जैसी बातें करने लगा। प्रलाप और उन्माद दोनों ही उनपर छा रहे थे। पहले तो बुधिया की दयालुता और सहृदयता का वर्णन करते हुए उसे सीधे बैकुण्ठ को पहुंचाते रहे और नशे की हालत में उसके दुख की कल्पना करके दोनों आंखों पर हाथ रखकर चीखें मार-मारकर रोने लगे।

घीसू ने उसे बाद में समझाया कि रोने से क्या लाभ, खुश होना चाहिये कि मरते-मरते भी वह हमें इतना आनन्द दे गयी। इससे माधव प्रफुल्लित हो उठा और दोनों खड़े होकर नाचने लगे। फिर मस्ती में भरकर गाने लगे- —

"ठगिनी, क्यों नैना झमकावे ! ठगिनी।"

पियक्कड़ों की आंखें उनकी ओर लगी हुई थीं। घर पर रात से मरी पत्नी पड़ी भिनक रही थी। पर उसकी चिन्ता से दूर अपनी मस्ती के आलम में घीसू और माधव शराब के नशे में धुत्त प्रलाप कर रहे थे और जब अधिक सहा न गया तो आखिर नशे से बदमस्त होकर वहीं गिर पड़े।

उधर पड़ोसी उनकी आने की बाट जोह रहे थे, और वे दोनों कफन को खरीदकर लाने की अपेक्षा स्वयं ही नशे में चूर, सड़क पर पड़े हुए थे।

कफन : शिल्प-विधान

प्रेमचन्द की कहानी "कफन" का कहानी-कला के तत्वों के आधार पर विश्लेषण करने के लिए निम्नलिखित तत्वों पर विचार करना होगा—कथानक, पात्र और चरित्र-चित्रण, संवाद, आरम्भ और अन्त, वातावरण, भाषा-शैली और उद्देश्य।

कथानक—प्रेमचन्द की आरम्भिक कहानियों के कथानक लम्बे और इतिवृत्तात्मक होते थे, पर उत्कर्ष काल की कहानियों के कथानक—और इसलिये "कफन" का कथानक कलात्मक, संक्षिप्त पर सुगठित है। इनके ये कथानक या तो किसी व्यक्ति या समस्या के एक पक्ष का निरूपण करते हैं अथवा किसी मनोवैज्ञानिक अनुभूति पर आधारित हैं। इस कहानी "कफन" में कथानक संक्षिप्त है पर संगठित है। डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल का कथन है कि इस कहानी में "जैसे कोई मनोवैज्ञानिक बिन्दु ही कहानी-भर में कथानक के नाम पर सूक्ष्म रेखा बन गयी हो।"

"कफन" में सर्वहारावर्ग के दो व्यक्ति—घीसू और माधव के द्वारा नैतिक पतन का बोध कराया गया है। दुःखों को सहते-सहते दोनों ही अकर्मण्य बन गये हैं। इसलिये मेहनती न होकर उपजीवी हो गये हैं। घर पर बुधिया मरी पड़ी है, पर उन्हें उसकी चिन्ता नहीं, कफन के लिए एकत्र किये गये रुपयों से पहले वे पूरी-कचौड़ी खाते हैं, शराब पीते हैं। जीवन में पहली बार मिलने वाली तृप्ति को वे छोड़ नहीं पाते, एतदर्थ सब कुछ भूलकर वर्तमान में ही रम जाते हैं। इसलिये प्रेमचन्द कहानी को चरमसीमा पर पहुंचाकर वहीं अन्त कर देते हैं। इससे करुणा का और साथ ही उसके मार्मिक जीवन का सहज ही स्पष्ट चित्र अंकित हो जाता है।

शीर्षक—कहानी का शीर्षक इतिवृत्तात्मक न होकर सूक्ष्म भावों को अभिव्यक्त करने वाला है। इसमें केवल बुधिया के कफन पर ही व्यंग्य नहीं है, मानव की मूल प्रवृत्ति की असहायता पर भी व्यंग्य है। बुधिया घर पर मृतक पड़ी है, उसके कफन के लिए एकत्र किए गए पैसे की शराब पी ली जाती है। क्योंकि दुःख सहते-सहते उनमें (घीसू और माधव में) उचितानुचित का विवेक नष्ट हो गया है। वे बुधिया का कफन नहीं, अपना ही कफन जैसे तैयार करते है। राजेन्द्र यादव के शब्दों में—"कफन अपने गहन अर्थों में बुधिया के कफन की कहानी नहीं, मानवता और मृत नैतिक बोध के कफन की कहानी है। यह

उस हताशा की कहानी है जो मनुष्य के आदित्य को आदिम स्तर पर ले जाती है और जहां पर अच्छे-बुरे का लोप हो जाता है।"सम्प्रत: कहानी का शीर्षक "कफन" सर्वथा उपयुक्त है।

पात्र और चरित्र-चित्रण—"कफन" कहानी में प्रेमचन्द ने मानवीय दुर्बलताओं का सफल एवं यथार्थ चित्रण किया है। इसके पात्र स्वाभाविक हैं और उनका आधार मनोवैज्ञानिक है। घीसू और माधव समाज की आर्थिक विषमता में शोषित वर्ग के प्रतिनिधि हैं। उनके चरित्रों में शोषितवर्ग की विपन्नता और उपजीविता साकार हो गई है। इसमें तीन पात्र हैं—बुधिया, घीसू और माधव। इनमें भी घीसू का चरित्र मुख्य है। बुधिया, घीसू और माधव का चरित्र विकसित करने के लिए कहानी में दी गयी है, क्योंकि उसके निधन से ही उनके चरित्र का निखार होता हैं।

प्रेमचन्द ने इन दोनों का चरित्र व्याख्यात्मक शैली में न देकर ध्वन्यात्मक रूप में दिया है। दोनों ही कफन के लिये मिले रुपयों से पहले पेटभर खाना चाहते हैं, पर एक-दूसरे से कह भी नहीं सकते। इसकी चित्रण-कुशलता देखिये—

माधव बोला—"लकड़ी तो बहुत है, अब कफन लेना चाहिये।"

"तो चलो, कोई हल्का-सा कफन ले लें।"

"हां और क्या, लाश ढोते-ढोते रात हो जायेगी, रात को कफन कौन देखता है।"

"कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते-जी तन ढंकने को चीथड़ा भी न मिले, उसे मरने पर नया कफन चाहिये।"

× × ×

दोनों एक-दूसरे के मन की बात ताड़ रहे थे। बाजार में इधर-उधर घूमते रहे। कभी इस बजाज की दूकान पर गये, कभी उस बजाज की दूकान पर। मगर कुछ जंचा नहीं, यहां तक कि शाम हो गयी, दोनों न जाने किस प्रेरणा से एक मधुशाला के सामने जा पहुंचे और जैसे किसी पूर्व निश्चित योजना से अन्दर चले गये।

पात्रों की मन:स्थिति की यह सूक्ष्म विवेचना प्रेमचन्द की कुशल लेखन-कला का स्पष्ट उदाहरण है।

संवाद—"कफन" कहानी के संवाद एक लड़ी की भांति हैं, जो पात्रों की

मनःस्थिति का बोध कराने के साथ-साथ कथानक को भी गति देते हैं, पाठकों में उत्सुकता उत्पन्न करते हैं और कहानीकार प्रेमचन्द की कलात्मकता, वाक्-पटुता, सूक्ष्मता तथा सम्बद्धता का परिचय देते हैं।

पात्रों की मनःस्थिति का चित्रण—"कफन" कहानी के संवाद पात्रों की मानसिक स्थिति और उनके आन्तरिक विचारों का सम्यक् परिचय देते हैं। यह चित्रण केवल संवादों के माध्यम से ही हो सकता है। घीसू और माधव की मनोव्यथा और अकर्मण्यता पर प्रकाश डालने वाला निम्न संवाद देखिये —

घीसू ने कहा—"मालूम होता है, बचेगी नहीं, सारा दिन दौड़ते हो गया। जा देख तो आ।"

माधव चिढ़कर बोला, "मरना ही है तो जल्दी मर क्यों नहीं जाती, देखकर क्या करूं।"

"तू बड़ा बेदर्द है, बे ! सालभर जिसके साथ सुख-चैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफाई !"

"तो मुझसे तो उसका तड़पना और हाथ-पांव पटकना नहीं देखा जाता।"

कथानक की गति—कुछ संवाद ऐसे हैं जिनसे कथानक आगे बढ़ता है और पाठकों में उत्सुकता जाग्रत होती है। एक उदाहरण देखिये—

"तू कैसे जानता है, उसे कफन न मिलेगा, तू मुझे ऐसा गधा समझता है क्या, साठ साल दुनिया में घास खोदता रहा हूं ? उसको कफन मिलेगा और इससे बहुत अच्छा मिलेगा।"

माधव को विश्वास न आया, बोला, "कौन देगा ?"

"वही लोग देंगे, जिन्होंने अबकी दिया। हां, अबकी रुपये हमारे हाथ न आयेंगे।"

यहां संवादों में पात्रों का व्यक्तित्व भी है और कथानक की गति भी। साथ ही रोचकता और सम्बद्धता भी कम नहीं है।

आरम्भ और अन्त—"कफन" कहानी का आरम्भ और अन्त प्रेमचन्द की कला-कुशलता का परिचायक है। इसके आरम्भ में ही समस्या का प्रस्तुतीकरण है। घीसू और माधव प्रयत्न करके हार गये हैं, पर बुधिया की दवादारू के लिये कहीं से कोई पैसा नहीं मिलता। इससे उनका मन हताश और दिमाग चिड़चिड़ा हो गया है। समस्या के उस मार्मिक पक्ष का उद्घाटन द्रष्टव्य है—

"झोंपड़े के द्वार पर बाप और बेटा, दोनों एक बुझे अलाव के समान चुपचाप बैठे हैं और अन्दर बेटे की जवान बीबी बुधिया प्रसव-वेदना से पछाड़ खा रही थी। रह-रहकर उसके मुंह से ऐसी दिल हिला देने वाली आवाज निकलती थी कि दोनों कलेजा थाम लेते थे।

एक निर्धन बिना दवा या नर्स की सहायता के किस प्रकार तड़प रही है, इसका संपूर्ण वातावरण सजीव हो गया है।

इस प्रकार अन्त में कथा का विकास जीवन के एक भयानक व्यंग्य पर समाप्त होता है। घर पर बुधिया मरी पड़ी है और उसका पति व ससुर—।

'पियक्कड़ों की आंखें इनकी ओर लगी हुई थीं। ये दोनों अपने दिल में मस्त गाये जाते थे। फिर दोनों नाचने लगे। उछले भी कूदे भी। गिरे भी, मटके भी, भाव भी बताये, अभिनय भी किये और आखिर नशे में मदमस्त होकर वहीं गिर पड़े।'

वातावरण—कहानी का वातावरण सजीव और मार्मिक है। इसमें आद्योपांत मार्मिक करुणा भरी पड़ी है। गरीबों की दुर्दशा और उनकी मानसिक व्यथा के सजीव आकलन से वातावरण भी कारुणिक-सा हो गया है। पियक्कड़ों की दशा और मदहोशी का भी अच्छा चित्र प्रस्तुत किया गया है। आरम्भ में ही वातावरण की सजीवता ध्वनित हो रही है। जाड़े की रात थी, प्रकृति सन्नाटे में डूबी हुई और सारा गांव अन्धकार में लय हो रहा था।

इस मौन वातावरण में रह-रहकर उठने वाली बुधिया की प्रसव-पीड़ा और भी करुणापूर्ण दृश्य अंकित कर देती है, ऊपर से घीसू और माधव की अकर्मण्यता और स्वयं खाने की फिक्र एक गहरा व्यंग्य छोड़ती है।

इसी तरह गरीब की मृत्यु पर चित्रित वातावरण में अन्य ग्रामीण स्त्रियों की दशा का वर्णन द्रष्टव्य है—

"गांव की नर्मदिल स्त्रियां आ-आकर लाश को देखतीं और उसकी बेकली पर दो बूंद आंसू गिराकर चली जाती थीं।"

यहां "बेकली" शब्द वातावरण को सजीव कर रहा है।

भाषा-शैली—"कफन" की भाषा सरल, सहज अभिव्यक्तिपूर्ण और मुहावरेदार है। इसमें आमफहम-साधारण बोल-चाल के शब्दों का प्रयोग किया गया है। शैली भी कलात्मक है। छोटे वाक्यों और व्यास-प्रधान शैली में प्रेमचन्द ने भावों की अनूठी व्यंजना की है। इस अभिव्यंजनापूर्ण भाषा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"यहां के वातावरण में सरूर था और हवा में नशा। कितने तो यहां आकर एक चुल्लू में मस्त हो जाते थे। शराब से ज्यादा यहां की हवा उन पर नशा करती थी।"

उद्देश्य—"कफन" कहानी यथार्थवादी कहानी है। मनोवैज्ञानिक यथार्थ की रचना होने के कारण इसका उद्देश्य है शोषण और गरीबी से उत्पन्न अकर्मण्यता और लापरवाही—उपजीविका का सच्चा चित्रण। प्रेमचंद यहां शोषण और अन्याय के विरुद्ध हैं। "दो गहने" में भी वह कहते हैं कि "जितने धनी हैं, वे सबके सब लुटेरे हैं, पक्के लुटेरे, डाकू। कल मेरे पास रुपये हो जायें और मैं एक धर्मशाला बनवा दूं तो देखिये, मेरी कितनी वाह-वाह होती है। कौन पूछता है कि मुझे दौलत कहां से मिली ?"

मानवता का यही शाश्वत प्रश्न "कफन" कहानी में व्यक्त हुआ है। सामाजिक मान्यताओं के प्रति विद्रोह की यह भावना देखिये—

"वह न बैकुण्ठ जायेगी तो क्या यह मोटे-मोटे लोग जायेंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों लूटते हैं, अपने पाप को धोने के लिये गंगा में नहाते हैं और मंदिरों में जल चढ़ाते हैं।"